विशारद प्रथम वर्ष

तबला- पखावज

(**पूर्णांक**:400, **न्यूनतम**:180)

क्रियात्मक:250; (**मौरिवक**:200+**मंच प्रदर्शन**:50)

न्यूनतम:128

शास्त्र:150, **न्यूनतम**:52:(26+26)

प्रथम प्रश्नपत्र

शास्त्र:-

1) ताल और ठेके मे अंतर, ताल की विस्तृत परिभाषा|
 सम, ताली, खाली, खंड/विभाग की जानकारी|

2) त्रिताल और झपताल में टुकडों को ठाह और दुगुन में लिपिबद्ध करने का अभ्यास|

3) निम्नलिखित की सोदाहरण परिभाषा|
 आमद, पेशकार, कायदा, रेला, चलन, गतपरन, मुखडा, मोहरा.

4) समान-मात्रा संख्या के विभिन्न तालों का तुलनात्मक अध्ययन:-
 1) दीपचंदी - झूमरा, आडा चौताल - धमार
 2) रूपक - तेवरा(तिव्रा) - पश्तो
 3) त्रिताल, तिलवाडा, अध्धा-पंजाबी|

5) लय और लयकारी के परस्पर संबंध की जानकारी तथा व्याख्या|

6) भारतीय संगीत वाद्यों के वर्गीकरण का सिद्धांत| जानकारी|

द्वितीय प्रश्नपत्र

1) तबला अथवा पखावज वाद्य की उत्पत्ति एवम् विकास का संक्षिप्त अध्ययन|

2) तबला वादन में प्रयुक्त विभिन्न बाजः विशेषता और तुलना|

3) तबला अथवा पखावज के घराने और उनकी वादन विशेषता तथा किसी एक घराने की संपूर्ण जानकारी|
 तबला - दिल्ली, लखनौ तथा पंजाब
 पखावज- कुदऊसिंह, नाना पानसे, तथा नाथद्वार

4) i) पेशकार, कायदा, रेला तथा गत का तबला एकल वादन में स्थान एवम् महत्त्व|
 ii) रेला, चक्रधार परन, स्तुतिपरन, बोलबाँट, आदेशी परन का पखावज वादन में स्थान एवम महत्त्व

5) निम्नलिखित तालों में से प्रत्येक में दो दमदार एवम् दो बेदम तिहाईयाँ माललिपि में लिखना:-
 1) तबला - त्रिताल, झपताल, आडाचौताल
 2) पखावज- तेवरा, सूलताल, आदिताल

6) तबला/पखावज तथा बाँयें के वादन में संतुलन बनाने के लिये आवश्यक रियाज की पद्धति|

7) निम्नलिखित तबला वादकों का जीवन परिचय तथा सांगीतिक योगदान:-

उ. सलारीखाँ, उ.मुनीरखाँ, पं.कंठेमहाराज, उ.गामेखाँ,

उ. करामतुल्लाखाँ, उ.इनाम अली खाँ, पं.पुरूषोत्तम दास पखावजी, पं.माधवराव अलगुटकर, पं.सखारामजी गुरव.

क्रियात्मक:

1) तबला/पखावज सुर में मिलाने का अभ्यास तथा हार्मोनियम पर विविध स्वरों के मध्यम एवम पंचम स्वरों को पहचानने की क्षमता|

2) रूपक, एकताल, सूलताल, चौताल, त्रिताल और झपताल इन तालों के ठेकों की दुगुन, तिगुन तथा चौगुन हाथ से ताली देकर पढना तथा बजाना|

3) (त्रिताल में निम्नलिखित का वादन):-

धा) "तिट" शब्द युक्त दो कायदे(एक तिस्र तथा एक चतुस्र) चार पल्टे तथा तिहाई|

त्र) दो कायदे जिनमें "तिरकीट" शब्द का प्रयोग हुआ हो, चार पल्टे तथा तिहाई|

क) धिं (दिं) तिरकीटतक शब्द समूह युक्त एक रेला, चार पल्टे एवम तिहाई|

धि) धिरधिर बोल समूह यक्त एक रेला, चार पल्टे तथा तिहाई|

कि) न्यूनतम पाँच बंदिशे (गत टुकडे)|

ट) दो दमदार तथा बेदम तिहाई|

(पखावज में निम्नलिखित वादन)

i) चौताल, धमार, तथा आदिताल में निम्नानुसार वादन

पडार, तिस्त्र, तथा चतुर्त जाति के रेले, स्तुतिपरन, गतपरन, तथा ताल परन का वादन, फरमाईशी चक्रदार परने तथा नौहक्का तिहाईयाँ.

4) निम्नलिखित शब्द एवम शब्द समूहों के रियाज की पद्धति:-

धातिरकिटतक तिरकिट, धाति, धागेतिट, धिरधिर, धिनगिन, गदिगन, धुमकिट, धिटधिट धागेतिट, धेत् तगिन्न

5) दादरा तथा केहरवा ताल में कलापूर्ण लग्गियों का प्रदर्शन|

6) तबला-झपताल और सवारी ताल(15 मात्रा) में से प्रत्येक मे दो कायदे(एक तिस्र तथा एक चतुस्र पल्टों सहित), एक रेला, दो दमदार तिहाई, और चार टुकडे|

पखावज- रूद्र तथा गजझंपा मे रेले, टुकडे, परने, तिहाईयाँ बजाने का अभ्यास

7) गायन-वादन की साथसंगत|

8) अब तक के अभ्यासक्रम में आए हुए तालों मे विभिन्न मात्राओं की दमदार तथा बेदम तिहाईयाँ|

9) विधिवत 30 मिनिट का मंच प्रदर्शन

अंकपत्रिका:

सूचना: १) इस परीक्षा के लिए हर एक विद्यार्थी को 50 मिनिट का समय निर्धारित किया गया है|

२) विद्यार्थी को सभी वादन लहरा के साथ करना होगा|

३) पखावज के लिए पाठ्यक्रमानुसार पखावज के ताल पूछे जाएँगे|

४) मंच प्रदर्शन निमंत्रिकों के सम्मुख स्वतंत्र रूपसे होगा, जिसके लिए अतिरिक्त समय तथा 50

अंक निर्धारित किये गये है|

1) तबले को स्वर मे मिलाने का अभ्यास तथा हार्मोनयम पर विविध स्वरों को बजाकर उनके मध्यम तथा पंचम स्वरों को पहचानना - 10 अंक

2) रूपक, एकताल, सूलताल, चौताल, त्रिताल, और झपताल के ठेकों को हाथ से ताली देकर दुगुन, तिगुन तथा चौगुन में पढना तथा बजाना - 15 अंक

3) त्रिताल में इस वर्ष के पाठ्यक्रमानुसार वादन - 50 अंक

4) पाठ्यक्रम में दिए गये शब्दु समूहों के रियाज की पद्धति का प्रदर्शन - 15 अंक

5) दादरा तथा कहरवा में कलापूर्ण लग्गियाँ - 10 अंक

6) झपताल में एक कायदा, एक रेला, चार टुकडे और दो तिहाईयाँ - 30 अंक

7) सवारी में एक कायदा, एक रेला, चार टुकडे और दो तिहाईयाँ - 30 अंक

8) विभिन्न मात्रा के तालों मे तिहाईयाँ - 10 अंक

9) गायन/वादन की साथ संगत - 20 अंक

10) सामान्य प्रभाव - 10 अंक

कुल मौखिक - 200 अंक

मंच प्रदर्शन-

1) त्रिताल में सम्पूर्ण एकल वादन 30 अंक

2) झपताल अथवा सवारी में एकल वादन 20 अंक

कुल अंक - 50 अंक